विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -**षष्ठ** **दिनांक -28-06-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -4 में दिए गए नर हो न निराश करो मन को नामक शीर्षक के रचयिता मैथिली शरण गुप्त जी के जीवन परिचय के बारे में अध्ययन करेंगे।

जीवन परिचय मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त (3 अगस्त 1886–१२ दिसम्बर १९६४) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उन्हें साहित्य जगत में 'ददा' नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और और इसी

कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी। उनकी जयन्ती ३ अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सन १९५४ में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध

काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिन्दी कविता के इतिहास में यह गुप्त जी का सबसे बड़ा योगदान है। घासीराम व्यास जी उनके मित्र थे। पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो 'पंचवटी' से लेकर 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और 'साकेत' तक में प्रतिष्ठित एवं प्रतिफलित हुए हैं। 'साकेत' उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है।

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएं)

गुप्त जी के लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रन्थों में **भारत भारती (1912), रंग-भंभ (1909), जयद्रव वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया** आदि उल्लेखनीय हैं ।

भारत भारती ने हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जगाई । 'रामचरितमानस' के पश्चात् हीन्दी में राम काव्य का दूसरा प्रसिध्द उदाहरण 'साकेत 'है । **'यशोधरा और 'साकेत'** मैथिलिशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य की रचना की ।